

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल मु.उ.पु. 24 पृष्ठ
कार्यालयीन उपयोग के लिए निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।



परीक्षा के नाम की सील

हायर सेकेण्डरी 2009

1. विषय कोड 0101 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/03/09 कोड सेट

केन्द्र क्रमांक की सील

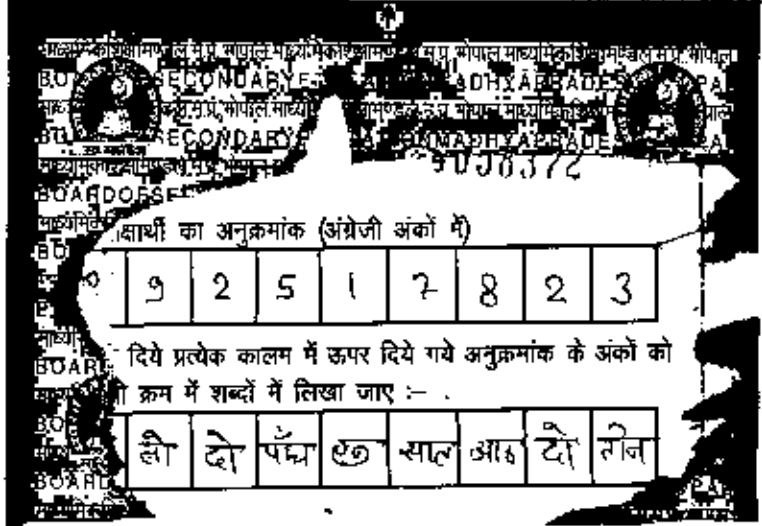
251024

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (संकेत A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें U-2001-e c

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में 1 अंकों में 2
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्षा क्रमांक 07 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।



B
S
E
M
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

[Signature]

नाम चञ्जेश यादव पद लिंगा.शि.-2

पता/संस्था P/M/S कनकपुर

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

[Signature]
हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

प्र
1
2
3
4
5
6
7
8
9
1
व
प्र

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका चर्या स्थिति में यथावत रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समा

हस्ताक्षर (परीक्षक)

[Signature]

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक

251024

दिनांक.....

दिनांक.....

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

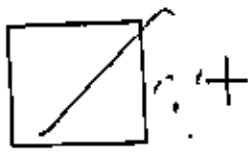
परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होली क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

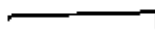
मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलाकर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

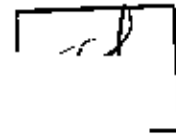
3



योग पूर्व पृष्ठ



पृष्ठ ३४ ३५ ३६



प्रश्न - 1 का उत्तर :-

(1) बंसार के दुखे से

(2) सुनहरी धात

(3) गणेशदास विद्यार्थी

(4) जगन्नाथ दास बल्लार

(5) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रश्न - 2 का उत्तर :-

(1) 69

(2) बसंत गीत

(3) अलौकिक बाला के प्रति प्रेम

(4) परिवार से मिलने की उसुकव फल

(5) आठते

B
S
E
M
P

सं.



प्रश्न - 3 का उत्तर :-

(1) सत्य ✓

(2) सत्य ✓

(3) सत्य ✓

(4) असत्य ✓

(5) असत्य ✓

B
S

M
P

प्रश्न - 4 का उत्तर :-

क	ख
(1) हिन्दी गद्य सहायिका घरोघर	(अ) निबन्ध ✓
(2) लाला में बेरागी हूँ	(ड) मीसनाई
(3) पुष्पक उच्युत्तर	(घ) लौ लौ टेन्नी लौ लौ
(4) आत्मकथा के क्षेत्र से निम्नी विधा	(क) संस्मरण
(5) महत्वपूर्ण परिवार की समलया	(ख) लये मेहमान

5

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 5 के अंक

कुल अंक



प्रश्न - 5 का उत्तर

(1)

सुभान ने ✓

(2)

कारण पर ✓

(3)

अरल वाक्य ✓

(4)

अठाना पुरुष की ✓

(5)

गमदवश मित्र ✓

B
S
E
M
P

प्रश्न - 6 का उत्तर

जब कितमंगल सिंह सुभान के अनुसार विस्तृत उर्दू सामने सुभान हैं। जो उसे सुभाने जो सामर्थ्य के साथ निकल पडते हैं। तथा जिसके सामने बड़े-बड़े पहाड भी अपना मार्ग छोड देते हैं। तथा उसीके मार्ग में विद्य पैंथ नही करते हैं।

तथा जो साहस के साथ बढ़ते हुये सैधर्ष के लिए निकल पडता हैं। और उस पर किसी भी प्रकार की बाधा का कोई प्रभाव नही पडता वह जो साहस के साथ अगि पडता ही जाता है। और विजय श्री उरडे उदमो के नीचे होती हैं। अर्थात् विजय उसी को तरण करती है।



जी अंसार जी अपने उद्देशों में सुखों में सामर्थ्य रखते हैं।
अंसार उन्हीं के आश्रय में नतमस्तक होगे हैं।

प्रश्न - 7 का उत्तर :-

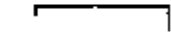
जबकि तिमिरी जी ने उदाहरे हैं कि वह ही वस्तु किसी को सुन्दर
और किसी को दुःख अर्थात् असुन्दर इस कारण लगती है
व्यक्ति जिसको वह वस्तु सुन्दर प्रतीत होती है। उसी
उस वस्तु के प्रति रुचि है। और उसे वह बहुत सुन्दर
लग रही है। किन्तु वही वस्तु यदि किसी को असुन्दर
लग रही है। तो उस व्यक्ति को उस वस्तु के प्रति
रुचि नहीं है। और वह उसे अच्छी प्रतीत नहीं हो
रही है। इसका कारण देखने वाले की रुचि से प्रतीत
होता है। कि वह वस्तु वैसी है।

रुचि पर ही निर्भर करता है। कि वह वस्तु
उसे अच्छी या बुरी लगे।

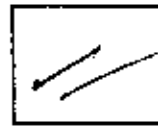
रुचि होगी तो उस वस्तु के प्रति हमारा स्नेह
बढ़ेगा और उन्हीं ओर धौर पड़ेंगे।

यदि रुचि नहीं है। तो हम उस वस्तु या व्यक्ति से
कुछ देना-देना नहीं पड़ती अर्थात् कोई मतलब नहीं
होता है।

7



+



:

पृष्ठ 7 के अंक

कूल अंक

कूल अंक



प्रश्न - 8 का उत्तर :-

हायावाद जत पूर्णतः समाप्त होने की दशा में चां उहे अंतिम चरण में था तो उसी क्षण लाले का प्रयास किया गया लेकिन असफल मिली। और तब से प्रगतिवाद का जन्म हुआ जिस समयकाल में जनियो ने अपनी अतंम अनुभूतियो को स्वर देना प्ररम्भ कर दिया तब से इसका प्रदुर्भाव हुआ। प्रगतिवाद में मार्क्स के इन्दात्मक सिधन्त का प्रतिपादन हुआ इस काल में शोषित और शोषक जैसे दो वर्ग बन गये थे जो इस कालीन जनियो के बन शोषक वर्ग की समस्याओं - दुख-सुखों को अपने हाथ का विषय बनाया और पूँजीपति के खिलाफ अग्रोश दिखाना इसी विशेषता मन गयी थी।

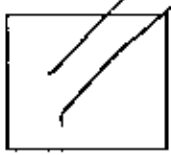
प्रगतिवाद कि विशेषताये

- (1) मानवतावाद की प्रधानता
- (2) समाजसुधारवादी काल्य
- (3) मजदूरों की शोषण से मुक्ती
- (4) नयी ही शोषण से मुक्ति।
- (5) यथार्थ चित्रण

(1) मानवतावाद :- प्रगतिवादी जनियो में मानवतावाद को श्रेष्ठ माना गया तथा ईश्वर-शक्ति को गौण इस कारण इसमें ईश्वर के प्रति अज्ञान्था का भाव प्रकट किया गया।

(2) समाजसुधार एवं यथार्थ चित्रण :- प्रगतिवादी जनियो में समाज में शैली गरीब, बेरोजगारी

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



आदि समस्या का यथार्थ चित्रण दिया

(3) मजदूरी के ब्योपन से मुक्ति हेतु इस राज्य में मजदूरी के ब्योपन का विरोध किया

गया तथा पुनर्विवादी शासन सत्ता पर अरुण उद्वार किया गया।

(4) आदि ब्योपन मुक्ति हेतु इस जमीन कर्तव्य में नयी शोखन मुक्ति पर विशेष ध्यान दिया

गया इसमें छायावाद की तरह नारी को व्यभोग की बस्तु न मानकर उसे समान में प्रतिष्ठीत स्थान दिया गया।

प्रश्न - प्रश्न उत्तर :-

जीवनी :- जीवनी किसी महान व्यक्ति की उचा का किसी

दूसरे द्वारा उल्लेख इस तरह वर्णन दिया जाता

है। जिसमें उल्लेख व्यक्ति के चरित्र उठे।

इसमें तटस्थता की आवश्यकता होती है।

इसमें जैसा उस व्यक्ति के साथ होता है। वैसा ही वर्णन

दिया जाता है। अतः यथार्थ का चित्रण इसकी उच्चतम

निशेध है।

आचार्य जयदीन उसाद शिवेदी की जीवनी तथा

गणेशशंकर त्रिपाठी द्वारा लिखित जहाँ तक जीवन

सांख्यिक आदि द्वारा लिखित जीवनी इसके उदाहरण

हैं।

B
S
E
M
P

9

31

+

4

=

35

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक



आत्मकथा :- आत्मकथा में व्यक्ति पर अपनी छहली का उभाव डाला
 जाल है। यह स्वयं शरा निहित विबंध ही प्रमुख
 विधा है। इसमें व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण जीवन का अंश
 को लेकर इस तरह से प्रस्तुत करता है। जिससे उसे
 प्रचीन काल तबों पर स्वतः प्रकाश पड़ता है।
 इसमें तदर्थता ही आवश्यकता मदी होती है।
 यह जल्पमित्र भी हो सकती है।

नेहरू जी की - मेरी छहली

इंदिरा जी की - आत्मकथा

इदि जीवनीयों के प्रमुख उदाहरण हैं।

S
E
M
P

प्रश्न - 10 का उत्तर

साहित्य में राम ज्ञायन जी ने स्नेह को अधिक महत्व दिया
 है। व्योमि धन ही सभी उमा सहते हैं। किंतु स्नेह का
 व्युत्पन्न केवल साहित्यकार ही कर सकते हैं। इसलिए यह
 स्नेह अर्जन करना ही श्रेष्ठ मानते हैं। जब भी यह छद्म
 होते हैं। सबसे पहले साहित्यकारों के पाठे लेकर उनसे
 मिलने जाते हैं। तथा उनसे मिलने पर उन्हें परम आनंद
 की अनुभूति होती है। तथा मिन से बतला व्यक्तिगत
 मिलना बली हो पाता है। उनसे पत्रों के माध्यम से प्रभाव
 उपचित करते हैं। तथा अपने को सतुष्ट करते हैं।
 वे मानते हैं। जो आनंद स्नेह में है। वह छद्म भी नहीं है।



इसी प्रकार वे साहित्य में स्नेह जो श्रेष्ठ मानते हैं। वे कहते हैं कि जीवन में भाई का स्थान देने वाली वधु पर अस्पताल में पड़ा युवक भी जो इन्हीं रचनाओं को पढ़ने की लालसा करता है। और तब से मिलने वाला हृषीकेश जो इस बात पर खरा है। कि मैं इतनी अच्छी रचना लिख कैसे लेता हूँ जिससे उसकी पत्नी और बेटी दोनों खुश हो सकें तथा कार्यलय में काम करने वाला लालू जो गैरी में से वैसा बचाकर मेरी रचनाएँ पढ़ता है। जिसपर साक्षिक पढ़ाने वाला लड़का इन सबका स्नेह ही मेरे लिए सब कुछ है। इस प्रकार रामनारायण उपाध्य साहित्य में स्नेह को महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

प्रश्न - 11 का उत्तर

माया का भ्रम ही व्यक्ति को संसार में मोह वंधन में लाने करता है। तथा जब वह व्यक्ति माया या मोह में लसा रहता है। उसके जीवन में दुख ही दुख रहता है। वह स्वयं निर्बल असहाय बना रहता है।

किन्तु जब व्यक्ति लक्ष्मी साधना से माया से भ्रम को दूर कर देता है।

तब उसमें स्वयं दित्य मलोक उजाहित होने लगता है। वह स्वयं उजाहित होने लगता है।



ब्रह्मदेव के उद्यम से यही स्पष्ट होना है कि देवी के मन से माया का भ्रम उत्पन्न हुआ तथा वह दिव्य अर्बुद ही रही है। वह ब्रह्म के रूप में मग्न हो संसार से विरक्त अपने को निर्गुण व्यापित, सर्वस्वरूपा आदि रूपों में देखने लगी है। वह भ्रम से बाहर निकल आयी है।

प्रश्न- 12 का उत्तर :-

दुर्मिल छंद - दुर्मिल सबैया छंद का ही रूप है। इसमें पार वर्ण याचरण तथा 24 वर्ण होते हैं। इससे अन्तर्गत सबैक छंद आता है। इसमें मत्स्यं, दुर्मिल आदि होते हैं।

उदाहरण सेस, महेश, गणेश, विष्णु, सुरसेतू निरत्न
ह्याति
आदि - अन्त, अद्भुत - अमैद - सुवेद
बतते।

जरद से सुठत्यास रहै, पचि लोटे लक पार
न पावे
ताहि आदि की छौरीयाँ छडियाँ मर
छौंछ में नाच नाचति।

B
S
E
M
P



(अ) प्रश्न - 13 का उत्तर =

जो भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र में बोली जाती है। तथा जिसका विकास सभी व्यक्तियों में पाया जाता है और जिसमें सांस्कृतिक और आवाज लगातार जोड़ते निहित होता है जो भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता में बांधने का काम करती है। मानव को पारस्परिक सञ्ज सम्पूर्ण हो जाती है। वही भाषा राष्ट्र भाषा कहलाती है।

राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ

(1) यह भाषा आवाज लगातार उत्पन्न करने वाली होती चाहिए।

(2) इसका विकास अधिक होता चाहिए।

(3) सरल सञ्ज होती चाहिए जो सभी को समझने सरलता से सीख सके।

(4) राष्ट्र को एकता के बंधन में बांधने वाली होती चाहिए।

(5) सभी को इससे लगातार होना चाहिए।

(ब) उदा में संगीत सबसे सुन्दर है। (निवेद्यात्मक)

उत्तर - उदा में संगीत सबसे सुन्दर नहीं है।

एक वर्ण होने पर हम बाहर नहीं जाते। (मिश्रित वाक्य)

उत्तर - जब वर्ण होती है। हम घर में बाहर

नहीं जाते



प्रश्न - किता उतर १२

जीवन परिचय

भाचार्य रामचन्द्र शुक्ल

रचनाओं - निबंधसंग्रह - चिंतामणि

अध्यायनात्मक - त्रिवेणी, रस-स्वीमांसा

साहित्य सेवा :- आपने महान लेखन शैली नियंत्रित तथा अनुस्यूत

की समिव्यापित की तथा आपने पुराने हिन्दी साहित्य में परम्परागत, मूल्यो, विश्वासो का नवीनता के साथ परिवर्तनवादी।

आपने आंचलिक परिवेश में रमकर काव्य रचना की।

भाषा :- आपकी भाषा पुष्ट परिष्कृत रचनी होती है।

आपकी भाषा में व्यर्थ के आडम्बरो का निरोध किया गया है।

आपने अपनी भाषा के गूढ रहस्यो को समझने के लिए लक्ष्मण, लक्ष्मण शब्दो का सवरा किया

आपने उर्दू, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, आरबी आरबी भाषा के शब्दो का भी सवरा किया

जिससे आपकी भाषा में सज्ज निखार आ

गया। आपने मुख्यरूपे लोकोक्तिओ का भी

उपयोग किया कही-कही को आपकी भाषा

सुन्दरीमये ले गयी।

B
S
E
M
P

14

योग

पृष्ठ 14 के अंक

कुल अंक



जैसे - शोध-बैरका आधार या मुल्ला है।

शैली - सहजता और सरलता आपकी शैली की विशेषता रही है।

आपने अनेक शैलीयों का उपयोग किया

- (1) वर्णाल्प शैली।
- (2) भाषाल्प शैली।
- (3) समीचीन शैली।
- (4) तुलनात्मक शैली।

(1) वर्णाल्प शैली - आपने विषय को समझने तथा जहाँ-जहाँ किसी वस्तु के बारे में विस्तृत जानकारी की आवश्यकता होती है वहाँ आपने इस शैली का उपयोग किया।

(2) भाषाल्प शैली :- जब आप किसी विषय का गहनता से अध्ययन करते हैं तब आपका ध्यान भर जाता है तब इस शैली का उपयोग करते हैं।

(3) समीचीन शैली :- आपने सैद्धांतिक सैद्धांत और व्यवहारिक विषयों की तुलना में या समीक्षा में इस शैली का उपयोग किया है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग



B
S
E
M
P

(1) तुलनात्मक ः = आपने समीक्षात्मक और मनोबेधरहित विषयों की समीक्षा में रस खोजी का प्रयोग किया।

साहित्य में स्थान ः = आपने समाज की परम्पराओं मूल्यों और विश्वासों का गहनता से अध्ययन किया। अतः आप इनके प्रति जागरूक रहे। तथा आप सदा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति रहे। इस कारण आपने साहित्य क्षेत्र में अनेक कार्य किये। आपका स्थान भी गौरवमय बना हुआ है।

प्रश्न-15 का उत्तर :-

सूरदास ः =

वचनाय, सूरसागर, सूरसायबली, साहित्य लक्ष्मी,

भावपक्ष ः = रसः आपने मुख्यतः शृंगार रस की मजबूत पूर्ण भावना और ठीकी ठीकी भाव्य सङ्घर्ष में स्थान दिया और सात है।

गुण ः = मुख्यतः माधुर्य गुण को सबसे प्रभावशाली मानते हुये रचनायें की।

अतः आपने माधुर्य का अच्छा वर्णन किया।



(3) सहृदयता और भावुकता :- आपने जिनके मन में जो
उस-न-उरने वाली भावुकता मिलती
है।

(4) प्रेम सौन्दर्य :- प्रेम सौन्दर्य का वर्णन आपने जिनके
मन में मिलता है। वास्तविक प्रेम
में मण्डित।

(5) लोभ-व्याग-भाव :- आपने जिनके लोभ-व्याग का
भाव विद्वान है।

(6) जीवन-दर्शन :- आपने जिनके जीवन को सही मार्ग पर
चलाने की प्रेरणा दी।

उदाहरण :- भाषा में आपकी सरलता-सजलता ब्रह्म भाषा
रही। इसमें व्यावहारिकता के भाव पाये
जाते हैं। आपने भाषा को पल्लवने वाली
भाषा का प्रयोग किया।

अपने अनेक शब्दों-उर्-अरुणी कास्ती का
भी सवरण किया।

मुझसे लोभ-व्याग से भाषा में मिलितता
आ गयी है।

अलंकार :- आपने अनेक अलंकारों का प्रयोग किया जैसे
रूप-उपमा-उत्प्रेषण-विरोधाभास आदि।

हृदय :- आपने जिनके हृदयों में स्थान दिया उनमें
दोष-दोष-सौन्दर्य आदि।



साहित्य में स्थान :- आपका ज्ञान्य भावपक्ष और उदापक्ष दोनों ही दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। आपका ज्ञान्य उद्देश्य को शीतलव्य पहुँचाने वाला है। अतः आपका साहित्य जगत में विशेष स्थान है।

प्रश्न-1 का उत्तर :-

ग्रथांश

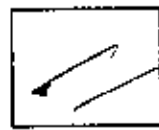
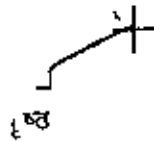
उसंग :- उस्तुत ग्रथांश हमारी पाठ्य पुस्तक में मय नामक पाठ से लिया गया है। इससे रचित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी हैं।

संक्षेप संदर्भ :- इसमें दुरत की सम्भावना मात्र से ही अवैगपूर्ण जलवा डल्पन होती है। उल्लेख वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- किसी दुरत या अपात्रि के जाने की आभासना मात्र अनुमान होने से जो हमारे मन में अवैगपूर्ण जलवा या जलवा डल्पन होती है या व्याकुल डल्पन होती है वही माशैज उल्लेखी है। इसमें मय जैसे व्याकुल हो नबे होती है और इसका प्रवेश भी धीरे-धीरे होता है किन्तु यह निराली अशुभ समय बाद है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ 17
योग



पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



प्रश्न- 17 का उत्तर :-

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यों हमारी पाठ्य पुस्तक के पाठ्य मीरा के पद नाम से लिया गया है। इसकी रचिता मीराबाई जी हैं।

संदर्भ :- यहाँ पर मीरा ने आपने पिय श्री छ्वा ने पाने के लिए आपने मन के उन्ही के चरणों में लीन रखने के लिए उब हैं।

व्याख्या :- मीराबाई उन्ही हैं। कि हे मन तु मंग नाम मज निने चरण उन्ही जैसे हैं निने गगन के बीच सिधसन हैं। मैं अपने उच्च सोच समझकर स्वर्गी हूँ किन्ती कीज जाते हैं तथा उब तीरथ हूँ उसी से यदि ईश्वर मिल जाये और तो मिल उठार गयी मे मरने से मोक्ष मिल जाये और यह उन्ही हैं कि इस देह का हमें हार्म नहीं करना चाहिए क्योंकि पहले मिलने वाला है। यह संसार में एक चौसर ही बुरी के लमान है जो साम लेगी ही उठ जाते हैं। यदि तीरथ उन्ही और गुरुमावस्तु धारण करने से तथा घर छोड़ देने से सन्यासी बन जाते हैं और फिर भी भगवान के कही प्य पाते हैं। तो हमें इस संसार में हीकार्य अपना पठ्य हैं।

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



इस उधार उसी का नाम अपना लेता है जो 'अन्न जमान' की
छाँसी की छानने वाला है।

प्रश्न - 18 का उत्तर

(क) चरित्र

(क) मानव जो भी अपने जीवन में बनाता है, इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व
की प्रधानता सबसे महत्वपूर्ण होती है।

यदि व्यक्ति चरित्र की दृष्टि से पाएगा है तो उसका
जीवन सफल माना जाने लगता है।

यही चरित्र ही व्यक्ति में आत्मविश्वास की भावना का

स्रोत आत्मनिर्भरता की भावना का विद्यमान होता है।

एक चरित्र रूपी शक्ति सभी शक्तियों से महान होती है।

यह विज्ञान विद्या, बुद्धि सम्पत्ति आदि सभी से
श्रेष्ठ मानी जाती है।

जिनके पास चरित्र नहीं होगा उनके पास अपार

धन होने से बावजूद भी कुछ नहीं होगा।

जो व्यक्ति तब मन से पवित्र और जेमल होता है

तथा उसमें शर्वव्य की भावना बरी होती है उसी में

चरित्र का निर्माण होता है। वही श्रेष्ठ चरित्र कला होता है।

मानव जीवन की सर्वांगीण सही चरित्र जो बनाने में ही

महत्वपूर्ण है।



(ग) परित्र रूपी शक्ति, विद्या, बुद्धि, सम्पत्ति आदि की शक्ति से महान होती हैं।

प्रश्न-19 का उत्तर

आवेदन पत्र

वैवा मे

श्रीमान सनित माध्यामिक
शिक्षा मण्डल भोपाल
(मध्य प्रदेश) भोपाल

विषय :- अंग सूची की द्वितीय प्रांति मेजने के संबंध में

महानुभव,

सविनय निवेदन है कि मे उद्या 10वीं की छात्र हूँ अतः मेने उद्या 10वीं की परीक्षा वासुकीय, उच्चतर माध्यिक विद्यालय मडिवादी से दी थी। मेने 2007 में परीक्षा दी थी मेने उद्या में प्रथम श्रेणी में उल्लिखित किया था। अतः मेरी समावधानी की वजह से मेरी अंग सूची ठीक गिर आयी है।



और मुझे उदासी में प्रवेश लेना है।
 जो बिना अंशुची के नहीं दिया जायेगा।
 इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि आप
 मुझे मेरी अंशुची की विधायक प्रति भेजने की
 कृपा करें। मैं आपकी आजीवन आभारी रहूँगी।
 धन्यवाद

दिनांक

12/03/09

प्राथी

27.2.

प्रश्न - 20 का उत्तर

निर्बंध

आत्मवाद

(1) प्रस्तावना

(2) अर्थ

(3) आत्मवाद के कारण

(4) (1) विदेशी प्रवृत्ति, (2) सामाजिक समस्या, (3) शान्ति

(4) आर्थिक (5) सरकारी विफलताएँ

(6) आत्मवाद को रोकने के कारण

(7) अ इयं च

I
S
E
M
P



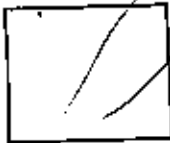
प्रस्तावना 0 = आज आतंजवाद देश की सबसे बड़ी समस्या बन गयी है। आज भारत जैसे विद्यार्थीय देश से लेकर अमेरिका जैसे शक्ति सम्पन्न राष्ट्र को भी आतंजवाद का सामना करना पड़ रहा है। अतः आज आतंज समस्या दुनिया को आतंजित करि डिये है।

अर्थ 0 = सामान्य आतंजवाद का तात्पर्य मारगट लया लट मारी से लगाया जला है। यह सभी हिंसा के शरणा है। सामान्यतः किशानों के हिंसा के बारे में अलग-अलग मत हैं। लेकिन सही तरीके से आतंजवाद का तात्पर्य भय पैदा करना वृद्ध स्वयंभूत करना ही है। हिंसा से ही आतंजवाद का जन्म होता है।

आतंजवाद के शरणा 0 = आतंजवाद अनेक शरणा से उत्पन्न होता है।

(1) विदेशी श्रुत नीति 0 = जो लोग देश की सम्पन्नता में विश्वास नहीं करते हैं अतः आज पब्लिक जिल तरह से साम्यवादी दंगों को तथा धार्मिक धर्मिखत को बढ़ा रही है। यह सबसे बड़ा कारण है।

B
S
E
M
P





(2) सामाजिक उत्तरण :- जिन व्यक्तियों को समाज की सेवा के समाना करना पड़ा है। वह भी निम्नलिखित व्यवहार को और बढ़ाते हैं।
आत्मवाद को बढ़ावा मिलता है।

(3) आर्थिक उत्तरण :- बेरोजगारी, गरीबी और निम्न जीवन स्तर भी आत्मवाद को जन्म देता है। जो व्यक्ति इनसे पीड़ित होता है। वह किसी भी तरह से इन अर्थिक उत्तरण का हल ढूँढता है। और इसकी शरण लेता है।

(4) राजनीतिक उत्तरण :- राजनीति भी आत्मवाद को बढ़ावा देती है। जो व्यक्ति राजनीति में आत्मवादी होते हैं। वे संरक्षण देते हैं। और अज्ञान को बढ़ावा देते हैं।
तथा चुनाव को जीतने में अज्ञान का उपयोग करते हैं।

(5) सांस्कृतिक उत्तरण :- सांस्कृतिक जीवन से भी आत्मवाद को बढ़ावा मिलता है। जो भी संस्कृति को बढ़ावा देता है। वह अज्ञान को बढ़ावा देता है। जिससे अज्ञान बढ़ावा मिलता है।



रीतने के कारण :- (1) देश की सीमा पर ठी सुरक्षा जरूरी चाहिए।

(2) आतंकवादियों को संरक्षण देने वाले के खिलाफ भी जरूरत है।

(3) इनके विरुद्ध उद्वेग उठाने चाहिए और उड़ीसा से पालन करना चाहिए।

(4) सभी को मिलकर इसका विरोध करना चाहिए।

(5) आतंकवाद को बर्बाद करने के लिए सर्वोच्च विवेक रखना चाहिए।

उपसंख्य :- आतंकवाद इससे मुक्ति पाने का एक ही रास्ता है। मिलकर विरोध करना और सभी को मिलकर ब्यापक करना है।

और अनेक विदेशों को भी इसके घाटे कागस होने की आवश्यकता है। जब तक अनेक देश अपने हथियारों को बचने को बाजार दुखों तक तक एक और ओसासा बिना बिना नम लेना रूँगा।

अतः अवश्य है इसके मित्ये की यदि हम संगठित हो जायें तो यह उक्ति या आतंक उधर एक नही बिगाड़ पायेगा।

बागों में दो जब आग
असियाव से मेरे।

बड़े पत्ते हवा देने बगे

क्या बिना पर उठिया था।

B
S
E
M
P